

---

# Upadesha Dashakam

---

## उपदेशदशकम्

---

### Document Information



---

Text title : Upadesha Dashakam

File name : upadeshadashakam.itx

Category : upanishhat, dashaka, upadesha, advice, upaniShat

Location : doc\_upanishhat

Author : Krishnananda Saraswati

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Description/comments : Minor works of Shri Krishnananda Saraswati

Latest update : November 6, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 6, 2025

*sanskritdocuments.org*

---



उपदेशदशकम्



अम्बरमहागहनडम्बरविडम्बमारवमरीचिपरिवाहपरिहासि ।  
सत्यदृशि यत्र समुदेति वियदादिः तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ १ ॥

चित्रकमभित्तकमिवोदयति यत्र व्योमनि विभूमनि समस्तमनवस्थम् ।  
सत्यसुखबोधवपुरस्ति यदनन्तं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ २ ॥

उद्धनघनस्थितिविमोहसमुदञ्चत्ताडयविनिघ्न जगदायसविकारैः ।  
व्येति न समेति न च यत्परमपारं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ३ ॥

अल्पकमनल्पमहिमन्यपविकल्पे यत्र च न पश्यति शृणोति न च किञ्चित् ।  
यत्परमभूमसुखवस्तुपरिगीतं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ४ ॥

अम्बरमणोरमलबिम्बमनुविम्बद्भङ्गिमातरङ्गगुणसङ्गतमिवान्धौ ।  
बुद्धिगुणबद्धमिव यत्तदनुविद्धं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ५ ॥

कस्तव स सप्तकवितस्तिमितकायो दुस्तरसमस्तरुगुपस्तरुणको यः ।  
यस्तु तमसः परमपारसुखरूपं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ६ ॥

पश्यति शृणोति परिजिघ्रति च येन स्वादयति वाचमभिव्यक्त्यविशयेन ।  
शश्वदधिध्वमनुपश्यति धियं यत्तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ७ ॥

सत्वगुणवृत्तिपटुनृत्तपरिवर्तानिङ्गति मणिद्युतिनिरङ्गमपसङ्गम् ।  
तेजयति यन्न रविचन्द्रमुखतेजः तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ८ ॥

वस्तु जगतश्च यदनन्तरमबाह्यं यस्य च जगत्तदनन्तरमबाह्यम् ।  
यच्च जगदेतदजगच्च परिशुद्धं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ९ ॥

अद्वयमनादिमदनन्तरमनन्तं सन्ततसुखं तदुपशान्तगुणमोहम् ।  
ज्योतिरनुदीतकमनस्तमितमेकं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ १० ॥

गुह्यमिदमेतदुपदेशदशकं यस्त्वक्तसलैषण गुणौ गुरुपुरस्सन् ।  
शीलयति सोऽपि च गृणाति गुरुभूतः तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ११ ॥

निस्तमसि नीरजसि निर्गलितसत्वे तेजसि विवेकजुषि भेदमतिशून्यम् ।  
यद्वचनमानसपदादिगमनन्तं तत्त्वमसि तच्चमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ १२ ॥

श्रीरामभद्रयोगीन्द्रचरणाम्बुजरेणुना ।

उपदेश दशश्लोकी कृष्णानन्देन निर्मिता ।

इति कृष्णानन्दकृतिषु उपदेशदशकं सम्पूर्णम् ॥

Notes:

The upadeshadashakam consists of 12 slokas repeating 48 times the famous mahAvAkyam महावाक्यं of Chāndogyoupanishad tattvamasi तत्त्वमसि emphasising the identity of the individual soul with the Cosmic.

Proofread by Rajesh Thyagarajan

---



*Upadesha Dashakam*

pdf was typeset on November 6, 2025



Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

